

डिजीटल भुगतान की दिशा में ई-वॉलेट प्रणाली की बढ़ती उपयोगिता का अध्ययन

डॉ. दीपिका यादव*

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, श्री नीलकण्ठेश्वर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिविल लाईन, खण्डवा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – आधुनिक युग उन्नत तकनीकों का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज नित्यनई तकनीकों का अविष्कार एवं प्रयोग हो रहा है। व्यावसायिक जगत भी नवीन तकनीकों के प्रयोग से अछूता नहीं है। परंपरागत व्यावसायिक प्रणाली के स्थान पर आज ऑनलाईन व्यावसायिक प्रणाली अधिक प्रचलन में है। ई-कॉमर्स प्रणाली के आ जाने से व्यापारी वर्ग एवं उपभोक्ता वर्ग के मध्य भुगतान की प्रणालियों में भी परिवर्तन देखने को मिला है। आज का ग्राहक परंपरागत नकदी भुगतान के स्थान पर ऑनलाईन भुगतान प्रणाली को अधिक वरीयता प्रदान करता है। आज के दौर में डिजीटल भुगतान लेन-देन का सबसे सरल एवं प्रचलित माध्यम बनकर उभरा है इस तकनीक ने परंपरागत नकदी भुगतान प्रणाली की जटिलताओं को समाप्त करते हुए लेन-देन को अधिक त्वरित, सुरक्षित, विश्वसनीय एवं सुविधाजनक बना दिया है। आज के युग में ऑनलाईन भुगतान या डिजीटल भुगतान के विभिन्न विकल्प मौजूद हैं जैसे :- डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, RTGS, NEFT एवं UPI या ई-वॉलेट आदि। इन सभी माध्यमों में से अधिक सुविधायुक्त माध्यम है ई-वॉलेट भुगतान। सामान्यतः ई-वॉलेट भुगतान प्रणाली को ही डिजीटल भुगतान प्रणाली की संज्ञा दी जाती है, किन्तु वास्तव में डिजीटल भुगतान प्रणाली भुगतान का एक इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है जिसके अन्तर्गत डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, मोबाईल वॉलेट एवं यूपीआई आदि सभी के द्वारा भुगतान किया जाना समाहित होता है, जबकि ई-वॉलेट भुगतान का वह माध्यम है जिसका प्रयोग मोबाईल एप के माध्यम से किया जाता है। भारत में विभिन्न प्रकार की ई-वॉलेट कंपनियाँ मौजूद हैं जो कि ग्राहकों को त्वरित भुगतान, होटल, बिजली, टिकट भुगतान, मोबाईल रिचार्ज, ऋण पुनर्भुगतान, किराया, बीमा एवं यातायात सुविधाओं जैसी अनेक सुविधाएँ एक क्लिक पर उपलब्ध कराती हैं। जिनमें मुख्यतः Bhim, Phone-Pay, G-Pay, Amazon-Pay, Paytm आदि अधिक प्रचलित ई-वॉलेट कंपनियाँ हैं, जो कि अपने ग्राहकों के लिए अपनी भुगतान प्रक्रिया को अधिक सरल एवं सुविधाजनक बनाने हेतु कार्यरत हैं, चूँकि इस तकनीक के अन्तर्गत भुगतान एक बटुए की भाँति होने वाले भुगतान की तरह इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से किया जाता है इसलिए ही इसे ई-वॉलेट भुगतान प्रणाली की संज्ञा दी जाती है। भारत में कोरोना महामारी के उपरान्त ई-भुगतान प्रणाली का प्रचलन अधिक बढ़ गया है। आज हम सभी कहीं न कहीं ई-भुगतान प्रणाली का प्रयोग अवश्य कर रहे हैं, जो इस तकनीक की लोकप्रियता की कहानी स्वयं ही कहता है।

साहित्य समीक्षा – प्रस्तुत शोध पत्र हेतु निम्न साहित्यों की समीक्षा की गई है –

1. विनोद कुमार एवं देवी (2023) का शोध पत्र डिजीटल वॉलेट के प्रति ग्राहकों के रवैये तथा उन्हें अपनाने पर आधारित रहा। इन्होंने 217 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्रित कर उनका विभिन्न सांख्यिकीय विधियों से परीक्षण कर निष्कर्ष दिए कि G-PAY एवं PHONE-PAY ई-वॉलेट कंपनियाँ उत्तरदाताओं के मध्य सर्वाधिक लोकप्रिय हैं इसके पश्चात् उत्तरदाताओं ने पेटीएम ई-वॉलेट को तीसरी वरीयता प्रदान की है। अपने अध्ययन द्वारा उन्होंने यह भी बताया कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं का यह मानना रहा है कि ई-वॉलेट तकनीक से भुगतान की प्रक्रिया त्वरित, सरल एवं सुविधाजनक होती है। वर्तमान समय में स्मार्टफोन एवं इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग ने उत्तरदाताओं को ई-वॉलेट भुगतान तकनीक के प्रति अधिक आकर्षित किया है।
2. कट्टी एवं अंगदी (2020) का शोध पत्र डिजीटल वॉलेट के प्रति भारतीय उपभोक्ताओं के रवैये पर आधारित रहा। इन्होंने वर्णनात्मक शोध पद्धति के आधार पर द्वितीयक समकों का प्रयोग किया साथ ही 125 उत्तरदाताओं से प्राथमिक समकों का एकत्रीकरण कर प्रतिशत विधि का प्रयोग कर निष्कर्ष दिए कि भारतीय उपभोक्ताओं के मध्य डिजीटल वॉलेट लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं तथा सुरक्षा, विश्वसनीयता, सुविधाजनक आदि वे घटक हैं जो कि उपभोक्ताओं को डिजीटल वॉलेट तकनीक का प्रयोग करने के लिए सर्वाधिक प्रभावित करते हैं। शोध अध्ययन में शामिल सर्वाधिक उत्तरदाता G-PAY की तुलना में PHONE-PAY के माध्यम से डिजीटल भुगतान को अधिक वरीयता प्रदान करते हैं।
3. प्रेमा (2023) का शोध पत्र भारत में डिजीटल वॉलेट के परिदृश्य में ग्राहक संतुष्टि का अध्ययन करने पर आधारित रहा। इन्होंने 100 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्रित कर उनका प्रतिशत विधि के आधार पर विश्लेषण किया तथा निष्कर्ष दिए कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं द्वारा विभिन्न भुगतान कार्यों हेतु PHONE-PAY ई-वॉलेट का अन्य ई-वॉलेट कंपनियों की तुलना में अधिक प्रयोग किया जाता है। डिजीटल वॉलेट कंपनियाँ अपने ग्राहकों के लिए धन के लेन-देन को अधिक सरल बनाने की दिशा में निरन्तर सफलता प्राप्त कर रही हैं। वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए इस बात की पूर्ण संभावना है कि वर्ष 2025 तक उपभोक्ताओं के मध्य डिजीटल वॉलेट का प्रयोग 300 प्रतिशत तक बढ़ सकता है।

4. अग्रवाल एवं वेश (2020) का शोध पत्र भारत में ई-वॉलेट बाजार के संदर्भ में ग्राहकों की प्राथमिकता को प्रभावित करने वाले विभिन्न घटकों पर आधारित रहा है। इन्होंने प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही प्रकार के समकों का प्रयोग कर विश्लेषण किया तथा निष्कर्ष दिए कि सरकार द्वारा BHIM UPI ऐप के माध्यम से ई-वॉलेट भुगतान के लिए ग्राहकों को अभिप्रेरित किया जा रहा है। सुरक्षा एवं गोपनीयता, सुविधाजनक भुगतान, ऑफर एवं लाभ तथा सामाजिक प्रभाव आदि वे तत्व हैं जो कि उपभोक्ताओं की ई-वॉलेट प्रणाली के द्वारा भुगतान किए जाने की प्राथमिकता को प्रभावित करते हैं। ई-वॉलेट या मोबाइल वॉलेट का उपयोग करनेवाले उपयोगकर्ता इन ई-वॉलेट कंपनियों की सेवा से संतुष्ट हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं का यह भी मानना है कि भविष्य में ई-वॉलेट, भुगतान का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरेगा।

5. मिश्रा एवं राजोरा (2018) का शोध पत्र युवाओं के विशेष संदर्भ में 'डिजिटल भुगतान प्रणाली' के अध्ययन पर आधारित रहा। इन्होंने 48 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर उनका रेखाचित्रों, ग्राफ एवं सहसंबंध आदि के आधार पर विश्लेषण किया तथा निष्कर्ष दिए कि अधिकांश युवा डिजिटल भुगतान प्रणाली की पूर्ण जानकारी रखते हैं तथा उनका प्रयोग भी करते हैं। अधिकांश युवाओं द्वारा डिजिटल भुगतान के लिए डेबिट कार्ड तथा क्रेडिट कार्ड का उपयोग किया जाता है। उत्तरदाताओं का यह भी मानना है कि डिजिटल भुगतान प्रणाली भुगतान का एक बेहतर एवं सुविधाजनक माध्यम है, इसलिए अधिक से अधिक लोग इस प्रणाली के लाभों से अवगत होकर अपने दैनिक लेन-देनों के लिए डिजिटल भुगतान को वरीयता प्रदान करने लगे हैं।

शोध के उद्देश्य - प्रस्तुत शोध निम्न उद्देश्यों पर आधारित रहा:

1. ई-वॉलेट या मोबाइल वॉलेट भुगतान तकनीक की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।
2. ई-वॉलेट तकनीक के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन करना।
3. ई-वॉलेट तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा देने वाले घटकों का पता लगाना।
4. वर्तमान परिदृश्य में ई-वॉलेट कंपनियों की उपयोगिता का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि - प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णतः द्वितीयक समकों पर आधारित है। शोध अध्ययन को पूर्ण करने हेतु विवरणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक समकों के संग्रहण हेतु विभिन्न वेबसाइटों, शोध पत्रों, शोध आलेखों, सूचनाओं, समाचार पत्रों आदि के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई है।

ई-वॉलेट तकनीक - ई-वॉलेट, मोबाइल वॉलेट या डिजिटल वॉलेट तकनीक भुगतान का एक इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है, जिसके अन्तर्गत दो बैंक खातों के मध्य स्मार्ट फोन, लेपटॉप जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का प्रयोग कर ऑनलाइन भुगतान ऐपका प्रयोग कर लेन-देन किए जाते हैं। यह एक कान्टेक्टलेस भुगतान पद्धति है। यह एक तरह का सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन ही है, जो अपने उपयोगकर्ता को कहीं से भी किसी भी स्थान पर त्वरित भुगतान की सुविधा उपलब्ध कराता है। ई-वॉलेट एक डिजिटल टूल है जो भुगतान की जानकारी को पूर्ण रूप से सुरक्षित कर स्टोर करता है। इस उपकरण का उपयोगकर्ता ऑनलाइन ट्रान्जेक्शन के माध्यम से किसी को भी कहीं से भी एक क्लिक पर धन का हस्तांतरण कर सकता है। अतः यह

तकनीक त्वरित इलेक्ट्रॉनिक भुगतान का बेजोड़ उदाहरण है।

ई-वॉलेट के प्रकार - ई-वॉलेट या मोबाइल वॉलेट एक डिजिटल मनी मैनेजमेंट एप्लिकेशन है जिसके अन्तर्गत प्रयोगकर्ता के कार्ड या बैंक के विवरण को प्रयोगकर्ता के मोबाइल पर संग्रहित किया जाता है तथा उन्हें वस्तुओं और सेवाओं के लिए भुगतान करने के लिए अनुमति प्रदान की जाती है। ये वॉलेट निम्न तीन प्रकार के होते हैं -

1. **ओपन ई-वॉलेट -** ओपन ई-वॉलेट किसी विशेष बैंक खाते से जुड़े नहीं होते हैं। इनका प्रयोग विभिन्न चैनलों अर्थात् विभिन्न उद्देश्यों हेतु अलग-अलग भुगतान माध्यमों हेतु किया जा सकता है। ओपन ई-वॉलेट हेतु भुगतानकर्ता किसी भी भुगतान विधि जैसे डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई आदि का प्रयोग करके अपने वॉलेट में धनराशि को जोड़ सकते हैं। इस प्रकार के ई-वॉलेट में शेष बची धनराशि बीमा कवर के अन्तर्गत शामिल नहीं होती है, क्योंकि उपयोगकर्ता द्वारा जोड़ी गयी धनराशि ई-वॉलेट शेष में संग्रहित होती है तथा बैंक खाते से जुड़ी नहीं होती है। ICICI पॉकेट एवं M-PAISA 'ओपन ई-वॉलेट' के उदाहरण हैं।

2. **क्लोज्ड ई-वॉलेट -** क्लोज्ड अर्थात् बंद ई-वॉलेट सीधे उपयोगकर्ता के बैंक खाते से जुड़े होते हैं। ऐसे ई-वॉलेट में भुगतान केवल किसी एक ऐप या प्लेटफॉर्म पर ही किया जा सकता है। विभिन्न चैनलों पर नहीं। क्लोज्ड ई-वॉलेट में उपयोगकर्ता द्वारा संग्रहित शेष धनराशि सुरक्षित रहती है, क्योंकि ऐसी धनराशि वॉलेट में संग्रहित न होकर सीधे उपयोगकर्ता द्वारा जोड़े गए बैंक खाते में संग्रहित होती है। क्लियर ट्रीप, मेक माय ट्रीप एवं बुक माय शो आदि क्लोज्ड ई-वॉलेट के कुछ उदाहरण हैं।

3. **सेमी क्लोज्ड ई-वॉलेट -** सेमी क्लोज्ड ई-वॉलेट में ओपन एवं क्लोज्ड दोनों ही प्रकार के ई-वॉलेट की विशेषताएँ समाहित होती हैं। ऐसे ई-वॉलेट में क्लोज्ड ई-वॉलेट की भाँति धन की सुरक्षा का गुण विद्यमान होता है क्योंकि धनराशि सीधे ग्राहक के बैंक खाते से जुड़ी होती है तथा ओपन ई-वॉलेट की भाँति भुगतान भी विभिन्न प्लेटफॉर्म या चैनलों पर किया जा सकता है। इस प्रकार सेमी क्लोज्ड ई-वॉलेट बैंलेस की सुरक्षा के साथ-साथ विभिन्न चैनलों पर भुगतान की सुविधा प्रदान करते हैं। G-Pay, Paytm, Phone-Pay, Bhim आदि ई-वॉलेट ऐप सेमी क्लोज्ड ई-वॉलेट के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं।

ग्राहकों में ई-वॉलेट तकनीक के प्रयोग को प्रभावित करने वाले घटक वर्तमान तकनीकी युग में ग्राहकों को भुगतान हेतु नकदी के स्थान पर ई-वॉलेट तकनीक का प्रयोग करने के लिए निम्न घटक प्रभावित करते हैं

1. **सुविधाजनक -** ई-वॉलेट तकनीक अपने ग्राहकों को नकदी रखने की आवश्यकता से मुक्त करती है। इस तकनीक के अन्तर्गत भुगतान एक क्लिक पर ऑनलाइन माध्यम से हो जाता है, जिससे ग्राहकों को बहुत ही कम समय में नकदी धन रखने के झंझट से छुटकारा मिल जाता है अतः हर समय नकदी न संभालने की सुविधा वह प्रमुख घटक है, जो कि ग्राहकों को ई-वॉलेट तकनीक का प्रयोग करने हेतु प्रेरित करता है।

2. **त्वरित भुगतान -** ई-वॉलेट तकनीक अपने ग्राहकों को त्वरित भुगतान की सुविधा प्रदान करती है। इस तकनीक के माध्यम से व्यक्ति किसी भी व्यक्ति को कभी भी, कहीं भी, एक क्लिक पर धन का हस्तांतरण किया जा सकता है। इसके लिए भुगतान प्राप्तकर्ता को प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं रहती है। अतः त्वरित भुगतान भी वह घटक है जो इस तकनीक के प्रयोग हेतु ग्राहकों को अभिप्रेरित करता है।

3. सुरक्षा एवं निजता – यह तकनीक अपने ग्राहकों को धन की सुरक्षा की सुविधा भी प्रदान करती है। इस तकनीक का प्रयोग करने हेतु ग्राहकों को मोबाईल एप पर अपने बैंक खाते को लिंक करना होता है तथा प्रत्येक लेन-देन के पूर्व एक पूर्व निश्चित पासवर्ड का प्रयोग करना होता है, जिससे कि कोई अन्य व्यक्ति उपयोगकर्ता की अनुपस्थिति में इस तकनीक के माध्यम से धन का हस्तांतरण नहीं कर सके। इस तरह यह तकनीक अपने ग्राहकों को सुरक्षा एवं निजता दोनों ही सुविधाएँ प्रदान करती है, जो कि ग्राहकों को ई-वॉलेट तकनीक का प्रयोग करने हेतु अभिप्रेरित करते हैं।

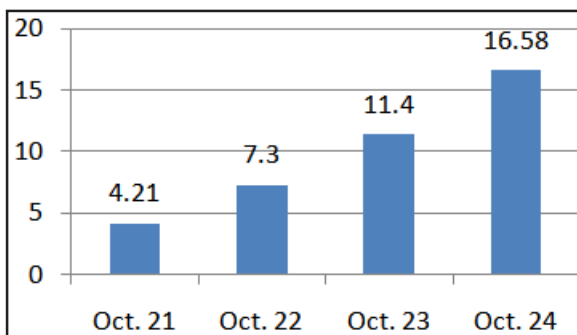
4. सामाजिक प्रभाव – कई बार ग्राहक अपने रिश्तेदारों, मित्रों एवं पड़ोसियों तथा समाज के अन्य व्यक्तियों से भी प्रभावित होकर इस तकनीक का प्रयोग करने हेतु अभिप्रेरित होते हैं।

5. ऑफर एवं रिवाई – कई ई-वॉलेट कंपनियाँ अपने ग्राहकों को कैश बैक, डिस्काउंट एवं अन्य प्रमोशनल ऑफर भी प्रदान करते हैं, जिससे उनकी ट्रांजेक्शन वैल्यू में वृद्धि होती है। अतः रिवाई एवं ऑफर भी वे तत्व हैं जो, ग्राहकों को ई-वॉलेट तकनीक का प्रयोग करने हेतु अभिप्रेरित करते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में ई-वॉलेट कंपनियों की उपयोगिता – वर्तमान समय में भारत में ई-वॉलेट कंपनियों ने भुगतान के विभिन्न माध्यमों में सबसे सरल, सहज एवं सुविधाजनक माध्यम के रूप में अपना वर्चस्व स्थापित किया है। इन कंपनियों के माध्यम से यूपीआई अर्थात् यूनिफाइड पेमेन्ट्स इंटरफेस डिजिटल भुगतान का सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। वर्तमान तकनीकी युग में जहाँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं, ऐसे में भुगतान प्रक्रिया के क्षेत्र में भी ई-वॉलेट कंपनियाँ क्रांतिकारी परिवर्तन लाई हैं। आज कोई भी व्यक्ति कहीं से भी अपने मोबाईल अथवा लेपटॉप के माध्यम से एक क्लिक पर अन्य किसी भी स्थान पर स्थित व्यक्तियों को भुगतान कर सकता है। भारत में ई-वॉलेट या यूपीआई भुगतानों की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि अक्टूबर 2024 तक यूपीआई कंपनियों ने कुल 16.58 बिलियन वित्तीय लेन-देन में 23.49 लाख करोड़ रुपये का प्रभावशाली लेन-देन किया है जो अक्टूबर 2023 में 11.40 बिलियन लेन-देन से 45 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि को दर्शाता है। विभिन्न यूपीआई एप से देश के कुल 632 बैंक जुड़े हुए हैं। यूपीआई भुगतानों में हुई यह वृद्धि देश में डिजिटल भुगतान के बढ़ते हुए प्रभुत्व को दर्शाता है। यूपीआई भुगतान देश में कैशलेस अर्थव्यवस्था की संकल्पना एवं डिजिटल भारत के अभियान को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यूपीआई लेनदेनों की मात्रा एवं मूल्यों में हुई वृद्धि को निम्न रेखाचित्रों के माध्यम से समझा जा सकता है।

रेखाचित्र क्रमांक 1

भारत में यूपीआई लेन-देन मात्रा (बिलियन में)

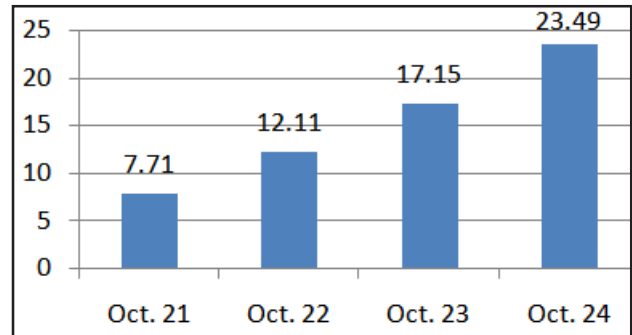


स्रोत – नेशनल पेमेन्ट्स कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया (NPCI)

उपर्युक्त रेखाचित्र क्रमांक 1 के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि अक्टूबर 2021 से अक्टूबर 2024 तक की अवधि में यूपीआई लेनदेनों की मात्रा में निरन्तर वृद्धि हुई है। अक्टूबर 2021 में देश में कुल 4.21 बिलियन यूपीआई लेन-देन हुए, जो कि अक्टूबर 2024 तक बढ़कर 16.58 बिलियन तक हो गए अर्थात् इस अवधि में यूपीआई लेन-देनों में कुल 293.82% वृद्धि हुई है जो कि यूपीआई लेन-देनों की बढ़ती लोकप्रियता का सफल चित्रण प्रस्तुत करता है।

रेखाचित्र क्रमांक - 2

भारत में यूपीआई लेन-देन मूल्य (रुपये लाख करोड़ में)



स्रोत – नेशनल पेमेन्ट्स कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया (NPCI)

उपर्युक्त रेखाचित्र क्रमांक 2 के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि भारत में अक्टूबर 2021 से अक्टूबर 2024 की अवधि में हुए यूपीआई लेन-देनों के मूल्य में भी निरन्तर वृद्धि हुई है। अक्टूबर 2021 में हुए यूपीआई लेन-देनों का मूल्य 7.71 लाख करोड़ रुपये था जो कि अक्टूबर 2024 की अवधि तक बढ़कर 23.49 लाख करोड़ रुपये हो गया है अर्थात् इस अवधि में हुए यूपीआई लेनदेनों के मूल्य में कुल 204.67% की वृद्धि हुई है। अतः यह कहा जा सकता है कि भारत में विभिन्न ई-वॉलेट कंपनियों का भविष्य उज्ज्वल है। भविष्य का उपभोक्ता परंपरागत भुगतान प्रणालियों के स्थान पर डिजिटल भुगतान प्रणाली को अधिक महत्व प्रदान करेगा।

निष्कर्ष – उपर्युक्त शोध पत्र के अध्ययन के पश्चात् निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं:

1. ई-वॉलेट भुगतान प्रणाली डिजिटल भुगतान प्रणाली का एक अभिन्न अंग है, जो अपने उपयोगकर्ता को मोबाईल या लेपटॉप के माध्यम से एक क्लिक पर किसी भी स्थान पर भुगतान करने या प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता है।
2. भारत में मुख्यतः तीन प्रकार के ई-वॉलेट प्रचलन में हैं – ओपन ई-वॉलेट, क्लोज्ड ई-वॉलेट एवं सेमी क्लोज्ड ई-वॉलेट।
3. ई-वॉलेट भुगतान तकनीक के माध्यम से उपयोगकर्ता एक ही प्लेटफॉर्म के माध्यम से विभिन्न भुगतानों जैसे बिजली बिल, होटल बिल, शॉपिंग बिल, परिवहन टिकट, व्यापारिक लेन-देनों का भुगतान सहजता से बिना किसी रुकावट के कर सकता है।
4. ई-वॉलेट भुगतान तकनीक डिजिटल भुगतान का त्वरित, सुविधाजनक एवं सुरक्षित माध्यम है, जिसमें ऑनलाइन धोखाधड़ी की संभावना कम रहती है।
5. भुगतान की सुविधा, त्वरित भुगतान, सुरक्षा एवं निजता, सामाजिक प्रभुत्व एवं रिवाई तथा ऑफर वे प्रमुख घटक हैं जो कि ग्राहकों को ई-

- वॉलेट भुगतान तकनीक का प्रयोग करने हेतु प्रभावित करते हैं।
6. भारत में अक्टूबर 2024 की अवधि तक कुल 632 बैंक यूपीआई कंपनियों के साथ जुड़े हुए हैं, जिनमें इस अवधि तक 16.58 बिलियन यूपीआई लेनदेनों के माध्यम से कुल 23.49 लाख करोड़ रुपये की धनराशि का हस्तांतरण किया गया है।

उपसंहार – वर्तमान भारतीय परिवेश डिजिटलीकरण के क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है। भविष्य का भुगतान बाजार डिजिटलीकरण के मार्ग पर प्रशस्त रहेगा। आज प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर रहा है। डिजिटलीकरण के इस दौर में उपभोक्ता वर्ग भी भुगतान की आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से अछुता नहीं है। आज का ग्राहक भुगतान हेतु डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, RTGS, NEFT एवं ई-वॉलेट जैसे आधुनिक माध्यमों का प्रयोग करने में हिचकता नहीं है। भुगतान के विभिन्न डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में सबसे त्वरित, सरल, सहज एवं सुविधा युक्त माध्यम है ई-वॉलेट भुगतान तकनीक। इस तकनीक ने अपने ग्राहकों को नकदी रखने की झंझट से मुक्त कर दिया है। ई-वॉलेट तकनीक भुगतान की एक महत्वपूर्ण प्रणाली बनकर उभरी है। आज के परिदृश्य में डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में ई-वॉलेट कंपनियों की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, क्योंकि इस तकनीक का उपयोग करने वाले उपयोगकर्ताओं की संख्या में भी निरंतर वृद्धि हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Vinoth Kumar, D. and Dr. Devi Saranya, 2023, "Consumer Perceptions and Adoption of Digital Wallets;

- A Survey Based Study", Mukta Shabd, Journal, August, Vol.-XII, Issue-VIII, Page No. 1594-1607.
2. Katti, Shilpa and Angadi, Amit 2020, "Perception of Indian Consumers towards Digital Wallets a Study," Sdmimd, December, Page No. 1-7.
3. Dr. Prema, N., 2023, "Digital Wallet Scenario In India : "A Study on Customers' Satisfaction", International Journal of Novel Research and Development (IJNRD), March, Vol.-8, Issue-3, Page No. B459-B467.
4. Aggarwal, Garima and Vaish, Arti, 2020, "E-wallet Market in India and to Identify Various Factors Affecting Customer Preference," Annals of R.S.C.B., December, Vol.-24, Issue-2, Page No. 484-499.
5. Mishra, Sweta and Rajora, Vidhi, 2018, "A study on Digital Payment System with Special Reference to Youth", International Journal of Creative Research Thoughts, Page No. 237-242.
6. <https://www.npci.org.in>
7. <https://www.pib.gov.in>
8. <https://www.bajajfinserv.in>
9. <https://www.hindi.economicstimes.com>
10. <https://www.epayspace.com>
11. <https://www.egovernance.vikaspedia.in>
12. <https://www.corporatefinanceinstitute.com>
13. <https://www.shiprocket.in>
